ऑगस्त कॉम्ट का त्रिस्तरीय नियम

Miss Chhaya

Assistant Professor

Department of sociology

Jain kanya pathshala pg college muzaffarnagar

प्रस्तावना
Introduction

सामाजिक विचारधारा का व्यवस्थित वैज्ञानिक रूप 19वीं शताब्दी में देखने को मिलता है और इसकी प्रथम संगठित नींव डालने का श्रेय **फ्रांसीसी दार्शनिक तथा समाजशास्त्री ऑगस्त कॉम्ट** को है कॉम्ट का पूरा नाम इसलिए प्रसिद्ध नहीं है कि आपने सामाजिक विचारधारा का आधार कल्पना ना रख कर वैज्ञानिक तथ्य,निरीक्षण,परीक्षण तथा वर्गीकरण रखा अपितु कॉम्त का नाम समाजशास्त्र के जनक के रूप में भी सर्वत्र परिचित है

कॉम्ट का जीवन चित्रण तथा कृतियां
Biographical sketch and writings

19वीं शताब्दी के प्रमुख विचारकों में अग्रणी अगस्त कॉम्ट का जन्म 19 जनवरी 1798 ईसवी में फ्रांस के मॉण्पेलियर नामों के स्थान में एक कैथोलिक परिवार में हुआ था अपने स्कूल के जीवन में ही **कॉम्टबेंजामिन फ्रैंकलिन** से अत्यंत प्रभावित थे। इस असाधारण प्रतिभा और क्षमता संपन्न सामाजिक विचारक कॉम्ट की मृत्यु सन 1857 इसवी में हुई थी।

कुछ विद्वानों का मत है कि कॉम्ट के ग्रंथों तथा जीवन में एकरूपता का पर्याप्त भाव है बहुत से लोग ऐसे हैं जिन्होंने की कॉम्ट की **पॉजिटिव फिलॉस्फी** ता हृदय से स्वागत किया परंतु **पॉजिटिव पोलिटी** की उतनी निंदा की जैसा कि पहले कहा गया है **जॉन स्टुअर्ट मिल** का यह निश्चित मत था की प्रथम कीर्ति के सर्जन के पश्चात ही कॉम्ट की असाधारण प्रतिभा और क्षमता का विनाश प्रारंभ हो रहा था।

तीन स्तरों का नियम
law of Three Stages

सन 1822 ईसवी में जब कॉम्ट 24 वर्ष के थे तब ही उन्होंने इस नियम को प्रतिपादित किया था

त्रिस्तरीय नियम

धार्मिक स्तर	तात्विक स्तर	प्रत्यक्ष (वैज्ञानिक) स्तर
. जीवसत्तावाद-जादू टोना – विश्वास – सभी चीज़ों में सत्ता जीवित . बहुदेवत्ववाद – अनेक देवी देवताओं का उदय - विश्वास	तात्विक स्तर – अमूर्त धारणा	प्रत्यक्ष स्तर – तात्विक विचारों को छोड़कर तर्क के आधार पर
. अद्वैतवाद- एक ईश्वर की कल्पना		

धार्मिक स्तर (Theological stage)

इस स्तर में समस्त चीजों को ईश्वर के प्रति रूप के रूप में या किन्हीं अलौकिक प्राणियों की तात्कालिक क्रियाओं के परिणाम के रूप में देखा,माना या समझा जाता है धारणा यह होती है कि समस्त चीजों का कार्य रूप अलौकिक शक्तियां (देव देवी या आत्मा) है तथा समस्त वस्तुओं में वही शक्ति व्याप्त है पेड़ पौधों जल प्रवाह चर अचर आदि सभी में वही शक्ति क्रियाशील है

कॉम्ट के अनुसार इस स्तर के भी तीन उपस्तर है-

1. **जीवित सत्तावाद –** प्रत्येक चीज में एक जीवित सत्ता का अनुभव हो जाता है और उसी के अनुसार अनेक जादू टोना पर विश्वास किया जाता है।
2. **बहुदेवत्ववाद –** मनुष्यो का मस्तिष्क अधिक संगठित होता है इस कारण अनेक देवता वह जादू टोना आदि से मानव परेशान हो जाता है और इसी कारण अनेक देवी-देवताओं का जन्म होता है यही बहुदेवत्ववाद है।
3. **अद्वैतवाद –** अद्वैतवाद मैं यह विश्वास स्पष्ट होता है कि ईश्वर केवल एक है और समस्त वस्तु या घटना उसी एक ईश्वर की सृष्टि है।

तात्विक स्तर (Metaphysical stage)

ईश्वर का चिंतन व्यक्ति के रूप में न होकर एक अमूर्त शक्ति के रूप में होता है जो कुछ भी संसार में हो रहा है वह एक व्यक्ति के रूप में ईश्वर के कारण नहीं वरण एक अदृश्य या निराकार व्यक्ति के कारण हो रहा है। उस अमूर्त निराकार शक्ति के आधार पर जो कुछ भी हो रहा है वह शाश्वत है और स्वयं पूर्ण है। इस स्तर की कोई विशिष्ट विशेषता उल्लेखनीय नहीं है क्योंकि यह स्तर धार्मिक और प्रत्यक्षात्मक स्तर के बीच का स्तर है।

वैज्ञानिक (प्रत्यक्षात्मक) स्तर(Positive Stage)

जब व्यक्ति तात्विक विचारों को छोड़कर निरीक्षण और तर्क के आधार पर इस संसार की घटनाओं को समझने और परिभाषित करने लगता है तब भी वैज्ञानिक या प्रत्यक्षवाद या प्रत्यक्षात्मक स्तर में उसका प्रवेश होता है।कॉम्ट का कथन है कि तर्क और निरीक्षण सम्मिलित रूप में वास्तविकज्ञान का आधार है।

अगस्त कॉम्ट का त्रिस्तरीय नियम समाजशास्त्र का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है जिसके माध्यम से अगस्त कॉम्ट ने समाज के उद्विकास को समझाया है।

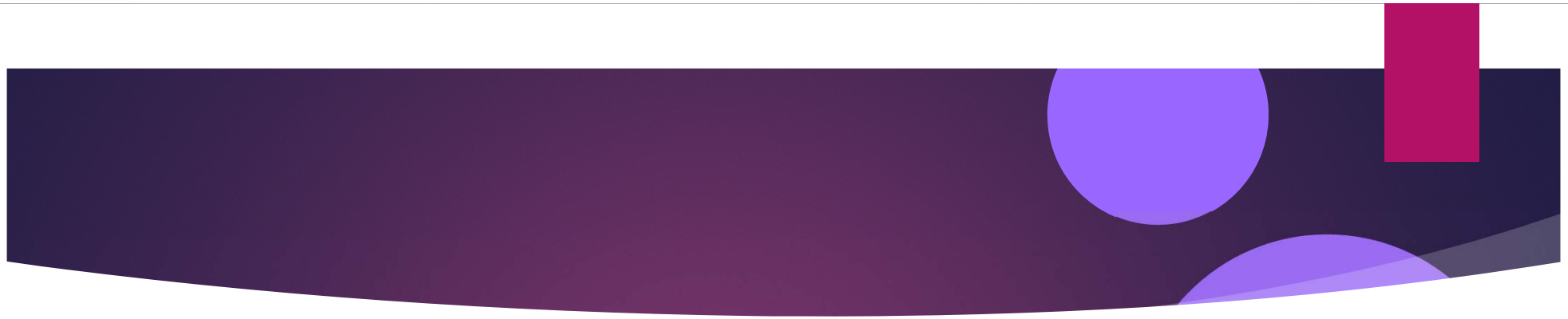

Thank you